1

प्रार्थना

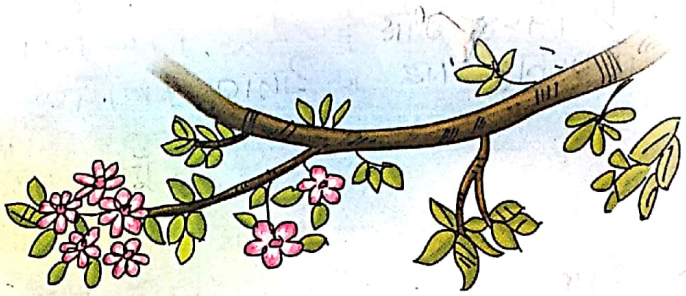

वह शक्ति हमें दो दयानिधे
कर्तव्य-मार्ग पर डट जाएँ,
पर-सेवा, पर-उपकार में हम
जग-जीवन सफल बना जाएँ।

हम दीन-दुखी, निबलों-विकलों के
सेवक बन संताप हरें,
जो हैं अटके, भूले भटके,
उनको तारें, खुद तर जाएँ।

छल, दंभ, द्वेष, पाखंड, झूठ
अन्याय से निशिदिन दूर रहें
जीवन को शुद्ध सरल बना,
शुचि प्रेम सुधा-रस बरसाएँ।

निज आन-बान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे
जिस देश, जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ।

—मुरारी लाल

शब्दार्थ

दयानिधे—ईश्वर; **पर-सेवा**—दूसरों की भलाई; **दीन**—असहाय; **निबल**—कमज़ोर; **विकल**—परेशान; **संताप**—कष्ट; **छल**—धोखा; **दंभ**—घमंड; **द्वेष**—ईर्ष्या; **पाखंड**—दिखावा; **निशिदिन**—रात-दिन; **शुचि**—पवित्रता; **मर्यादा**-सम्मान

Scanned with CamScanner

Std-V L-1 प्रार्थना

शब्दार्थ :-

मार्ग - रास्ता

डट जाएँ - न हटना

जग - दुनिया, संसार

अटके - रुकना

शुद्ध - पवित्र, अच्छा

बलिदान - न्योछावर होना

प्रेम-सुधा → स्नेह की भावना,
भाई - चारे की भावना

निज - स्वयं, अपना

आन - बान → इज्ज़त

अभिमान - गर्व

भावार्थ :-

कवि कहते हैं कि हे ईश्वर! मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं अपने कर्तव्य के रास्ते से न हटूँ। दूसरों की सेवा व भलाई कर इस दुनिया में मैं अपने जीवन को सफल बना लूँ।

कवि कहते हैं कि ग़रीबों, दुखियों, कमज़ोर व परेशान लोगों की सेवा कर हम उनके कष्टों को दूर करें तथा जो अपने कर्तव्य के रास्ते में रुके तथा भटके हुए हैं, उनको रास्ता दिखाकर स्वयं के जीवन को भी सफल बना लें।

कवि ईश्वर से इतनी शक्ति माँगते हैं कि वे धोखा, घमंड, ईर्ष्या, दिखावा, झूठ व अन्याय से हर-

Scanned with CamScanner

दिन दूर रहे, जिससे उनका जीवन अच्छा और आसान बन जाए और लोगों में भाई-चारे की भावना फैलाए।

कवि कहते हैं कि हमें अपनी इज्ज़त, प्रतिष्ठा का हमेशा ध्यान रखना चाहिए तथा देश की रक्षा में समय आने पर न्योछावर भी हो जाना चाहिए।

अतः कवि ईश्वर से हर बुराइयों से दूर रहने तथा अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाने की शक्ति माँगते हैं।

प्रश्न - उत्तर :-

Q.1. कवि किस पथ पर डटा रहना चाहता है?

उत्तर:- कवि अपने कर्तव्य पथ पर डटा रहना चाहता है।

Q.2. हम कमज़ोर और परेशान लोगों का कष्ट किस प्रकार दूर कर सकते हैं?

उत्तर:- हम कमज़ोर व परेशान लोगों की सेवा कर व सही मार्ग दिखा कर, उनके कष्टों को दूर कर सकते हैं।

Q.3. देश पर बलिदान होने का क्या अर्थ है?

उत्तर:- देश पर बलिदान होने का अर्थ है कि हम अपनी मातृ-भूमि की सुरक्षा व सम्मान के लिए खुद को न्योछावर कर दें।

Q.4. हम प्रभु से शक्ति क्यों माँगते हैं?

उत्तर:- हम कर्तव्य के रास्ते पर चलने, दूसरों की सेवा व भलाई करने, भूले-भटकों को रास्ता दिखाने, अपनी प्रतिष्ठा बचाते हुए देश की रक्षा में न्योछावर होने की शक्ति माँगते हैं।

Q.5. हमें किन दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए?

Scanned with CamScanner

उत्तर:- हमें धोखा, घमंड, ईर्ष्या, दिखावा, झूठ व अन्याय जैसे दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए।

Q.6. स्वदेश का क्या महत्व है?

उत्तर:- स्वदेश यानि अपना देश। यह देश, जहाँ हमने जन्म लिया, अपनी इच्छाओं व उद्देश्यों को प्राप्त कर जीवन को सफल बनाया। ये सारी चीजें स्वदेश में ही संभव है।

Q.7. कवि किस बात पर अभिमान करना चाहता है?

उत्तर:- अच्छे कार्यों द्वारा समाज में इज्जत व प्रतिष्ठा बढ़ती है, जिसका कवि को अभिमान है।

Q.8. यह प्रार्थना हमें क्या संदेश देती है?

उत्तर:- यह प्रार्थना हमें सुमार्ग पर चलने, परोपकार करने, अन्याय से दूर रहने व देश पर न्योछावर होने का संदेश देती है।

Q.9. वाक्य बनाइए :-

क) रात - दिन →

ख) सुख - दुख →

ग) जीवन - मरण →

घ) पर - उपकार →

Scanned with CamScanner